IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709

THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

IGNOU

एईडी-01

(हिन्दी माध्यम)

IMPORTANT QUESTION ANSWER

GUESS PAPER / EXAM NOTES

From Previous Year Papers

FOR MORE PDF 9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 58 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

प्रत्येक उत्तर 400-500 शब्दों में दें

क्यू । - भारत की विदेश व्यापार नीति के अंतर्गत निर्यात संबंधी सामान्य प्रावधानों की व्याख्या करें। 12

उत्तर- _ भारत की विदेश व्यापार नीति में निर्यात प्रोत्साहन

भारत की विदेश व्यापार नीति (एफटीपी) का लक्ष्य निर्यात बढ़ाना, आर्थिक विकास को बढ़ाना और व्यापार संतुलन में सुधार करना है। इसमें निर्यात को सुविधाजनक बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रावधान शामिल हैं। निर्यात के संबंध में सामान्य प्रावधान इस प्रकार हैं:

निर्यात प्रोत्साहन योजनाएँ

एफटीपी में निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शामिल हैं:

1. **निर्यात संवर्धन पूंजीगत सामान (ईपीसीजी) योजना:** यह योजना निर्यात दायित्वों के अधीन, शून्य या रियायती सीमा शुल्क पर पूंजीगत सामान के आयात की अनुमति देती है। यह प्रौद्योगिकी को उन्नत करने और प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने में सहायता करता है।

2. **भारत से व्यापारिक निर्यात योजना (एमईआईएस):** एमईआईएस निर्यातकों को शुल्क क्रेडिट स्क्रिप प्रदान करता है, जो उनके निर्यात के फ्री ऑन बोर्ड (एफओबी) मूल्य का एक प्रतिशत प्रदान करता है। इन स्क्रिपों का उपयोग इनपुट और वस्तुओं पर शुल्क का भुगतान करने के लिए किया जा सकता है या स्थानांतरित या बेचा जा सकता है।

3. **भारत से सेवा निर्यात योजना (एसईआईएस):** सेवाओं के निर्यात को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, एसईआईएस अर्जित शुद्ध विदेशी मुद्रा के एक निश्चित प्रतिशत के आधार पर शुल्क क्रेडिट स्क्रिप प्रदान करता है। यह आईटी, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा जैसे सेवा क्षेत्रों को बढ़ावा देता है।

निर्यात प्रोत्साहन और लाभ

निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए, एफ़टीपी विभिन्न प्रोत्साहन प्रदान करता है:

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 58 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

1. **शुल्क वापसी:** निर्यातकों को अंतिम उत्पाद के निर्यात में उपयोग किए गए आयातित इनपुट पर भुगतान किए गए सीमा शुल्क का रिफंड मिलता है।

2. **जीएसटी रिफंड:** निर्यातित वस्तुओं में उपयोग किए गए इनपुट के लिए भुगतान किए गए वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) पर रिफंड प्रदान किया जाता है।

3. **ब्याज समकरण योजना:** निर्यातकों को सस्ता ऋण प्रदान करने के लिए, यह योजना विशिष्ट निर्यात क्षेत्रों के लिए शिपमेंट से पहले और बाद के ऋण पर ब्याज दरों में सब्सिडी देती है।

बाज़ार पहुंच पहल

एफ़टीपी भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के लिए बाज़ार पहुंच बढ़ाने पर केंद्रित है:

1. **व्यापार समझौते:** भारत बाजार पहुंच बढ़ाने, टैरिफ कम करने और व्यापार के अवसरों को बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार समझौतों में संलग्न है।

2. **निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसी):** ईपीसी बाजार विकास को सुविधाजनक बनाती है, बाजार की जानकारी प्रदान करती है और निर्यातकों को अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचने में सहायता करती है।

3. **व्यापार मेले और प्रदर्शनियाँ:** एफ़टीपी भारतीय उत्पादों को प्रदर्शित करने और नए बाज़ारों का पता लगाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों में भागीदारी का समर्थन करता है।

प्रक्रियाओं का सरलीकरण

एफ़टीपी का लक्ष्य निर्यात-संबंधित प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना है:

1. **अनुपालन को आसान बनाना:** प्रक्रियाओं के सरलीकरण और डिजिटलीकरण से निर्यात-संबंधी अनुपालन के लिए आवश्यक कागजी कार्रवाई और समय कम हो जाता है।

2. **सिंगल विंडो इंटरफ़ेस:** सिंगल विंडो इंटरफ़ेस फ़ॉर ट्रेड (स्विफ्ट) जैसी पहल का उद्देश्य सभी निर्यात-संबंधित मंजूरी और अनुमोदन के लिए एक ही मंच प्रदान करना है।

3. **निर्यात प्रतिबंधों को आसान बनाना:** नीति समय-समय पर व्यापार को बढ़ावा देने और सुचारू निर्यात संचालन की सुविधा के लिए निर्यात प्रतिबंधों की समीक्षा करती है और उन्हें आसान बनाती है।

निष्कर्ष

भारत की विदेश व्यापार नीति प्रोत्साहन प्रदान करके, बाजार पहुंच को बढ़ावा देकर, प्रक्रियाओं को सरल बनाकर और निर्यातकों के लिए अनुकूल माहौल बनाकर निर्यात को बढ़ावा देने का प्रयास करती है। इन प्रावधानों का सामूहिक उद्देश्य भारत की वैश्विक व्यापार उपस्थिति और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना है।

क्यू । - "क्या आपको लगता है कि अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तों को सार्वभौमिक रूप से अपनाया गया है।" विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तों पर चर्चा करें और समझाएँ। 3+9

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 58 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

उत्तर- _ परिचय

अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तें विभिन्न देशों के पक्षों के बीच मानकीकृत परिभाषाएँ और अपेक्षाएँ स्थापित करके वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालाँकि सार्वभौमिक रूप से अपनाने की दिशा में प्रयास किए गए हैं, लेकिन राष्ट्रों में विविध कानूनी प्रणालियों और सांस्कृतिक बारीकियों के कारण पूर्ण मानकीकरण मायावी बना हुआ है। कई अंतरराष्ट्रीय अनुबंध शर्तों को प्रमुखता मिली है, फिर भी उनकी सार्वभौमिक स्वीकृति पर काम जारी है।

अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तों को समझना

1. **INCOTERMS (अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक शर्तें):** इंटरनेशनल चैंबर ऑफ कॉमर्स (ICC) द्वारा स्थापित INCOTERMS, व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त हैं और अंतर्राष्ट्रीय लेनदेन में विक्रेता और खरीदार की जिम्मेदारियों को परिभाषित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। इनमें एफओबी (बोर्ड पर मुफ़्त), सीआईएफ (लागत, बीमा और माल ढुलाई), और ईएसडब्ल्यू (एक्स वर्क्स) जैसे शब्द शामिल हैं, जो डिलीवरी, जोखिम और लागत के संबंध में दायित्वों को रेखांकित करते हैं।

2. **माल की अंतर्राष्ट्रीय बिक्री के लिए अनुबंधों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन (सीआईएसजी):** कई देशों द्वारा अपनाया गया सीआईएसजी, विभिन्न देशों में स्थित पार्टियों के बीच माल की बिक्री के लिए अनुबंधों को नियंत्रित करने वाले नियम प्रदान करता है। यह प्रस्ताव और स्वीकृति, अनुबंध निर्माण और उल्लंघन के उपचार से संबंधित अनुबंध शर्तों का मानकीकरण करता है।

अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तों को सार्वभौमिक रूप से अपनाना

1. **सार्वभौमिक अंगीकरण की चुनौतियाँ:** सांस्कृतिक, कानूनी और वाणिज्यिक मतभेद अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तों को पूर्ण रूप से अपनाने में बाधा डालते हैं। विभिन्न देशों में शर्तों की अलग-अलग व्याख्याएं, अलग-अलग कानूनी प्रणालियां और विविध व्यावसायिक प्रथाएं सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण बनाती हैं।

2. **मानकीकरण की दिशा में प्रगति:** चुनौतियों के बावजूद, अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तों के उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किए गए हैं। ICC जैसे संगठन अधिक वैश्विक स्वीकृति और समझ के लक्ष्य के साथ, विकसित व्यापार प्रथाओं के साथ तालमेल बिठाने के लिए INCOTERMS को लगातार अपडेट करते रहते हैं।

गोद लेने को प्रभावित करने वाले कारक

1. **कानूनी प्रणालियाँ और विनियम:** देशों के बीच विभिन्न कानूनी प्रणालियाँ और नियम मानकीकृत अनुबंध शर्तों को अपनाने पर प्रभाव डालते हैं। नागरिक कानून वाले देशों में सामान्य कानून वाले देशों की तुलना में अलग-अलग व्याख्याएं हो सकती हैं, जो इन शर्तों की प्रयोज्यता और समझ को प्रभावित करती हैं।

2. **सांस्कृतिक और व्यावसायिक प्रथाएँ:** सांस्कृतिक अंतर और विविध व्यावसायिक प्रथाएँ कुछ अनुबंध शर्तों के लिए प्राथमिकता को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में, ऐतिहासिक व्यापार प्रथाओं या प्रथागत व्यावसायिक मानदंडों के कारण विशिष्ट शब्दों को प्राथमिकता दी जा सकती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत:, जबकि INCOTERMS और CISG जैसी अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध शर्तों को अपनाने में काफी प्रगति हुई है, सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त करना एक जटिल कार्य बना हुआ है। कानूनी प्रणालियों, सांस्कृतिक प्रथाओं और व्यावसायिक मानदंडों में अंतर महत्वपूर्ण बाधाएँ प्रस्तुत करता है। हालाँकि, मानकीकृत शर्तों को अद्यतन करने और बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा चल रहे प्रयासों का उद्देश्य इन अंतरालों को पाटना

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 58 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

और सहज अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधों को सुविधाजनक बनाना है। वैश्विक वाणिज्य को सुविधाजनक बनाने के लिए स्पष्ट, अधिक मानकीकृत शर्तों की आवश्यकता से प्रेरित होकर, सार्वभौमिक अपनाने की खोज जारी है।

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT - HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905 OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

क्यू । - (ए) उदाहरण सहित स्पॉट रेट और फॉरवर्ड रेट के बीच अंतर बताएं।

उत्तर- _ **हाजिर दर:**

स्पॉट रेट वर्तमान विनिमय दर को संदर्भित करता है जिस पर एक मुद्रा जोड़ी को तत्काल डिलीवरी और निपटान के लिए खरीदा या बेचा जा सकता है, आमतौर पर दो व्यावसायिक दिनों के भीतर। यह तत्काल लेनदेन के लिए प्रचलित बाजार दर है। यह दर विभिन्न कारकों जैसे आपूर्ति और मांग, ब्याज दरें, मुद्रास्फीति, भू-राजनीतिक घटनाएं और बाजार भावना से प्रभावित होती है।

उदाहरण: मान लीजिए कि अमेरिकी डॉलर (यूएसडी) और यूरो (यूरो) के बीच स्पॉट विनिमय दर 1 यूएसडी = 0.85 यूरो है। यदि कोई व्यक्ति आज यूरो के लिए $1000 का आदान-प्रदान करना चाहता है, तो उसे स्पॉट रेट के आधार पर 850 यूरो प्राप्त होंगे।

आगे की दर:

दूसरी ओर, आगे की दर, एक मुद्रा जोड़ी के लिए आज सहमत विनिमय दर है जिसे एक निर्दिष्ट भविष्य की तारीख पर वितरित और तय किया जाएगा, आमतौर पर दो व्यावसायिक दिनों के बाद। यह स्पॉट रेट पर विचार करके और इसमें शामिल दो मुद्राओं के बीच ब्याज दर के अंतर के आधार पर इसे समायोजित करके निर्धारित किया जाता है।

उदाहरण: मान लें कि USD से EUR के लिए एक वर्ष की आगे की दर 1 USD = 0.80 EUR है। इसका तात्पर्य यह है कि एक वर्ष में, एक व्यक्ति 1000 डॉलर को 800 यूरो में बदल सकता है। निर्दिष्ट अवधि के लिए अमेरिका और यूरोप के बीच ब्याज दर के अंतर जैसे कारकों के कारण फॉरवर्ड रेट स्पॉट रेट से भिन्न होता है।

अंतर:

मुख्य अंतर लेनदेन के समय में निहित है: स्पॉट दरें तत्काल निपटान के लिए हैं, जबकि आगे की दरें पूर्व निर्धारित मूल्य पर भविष्य के लेनदेन के लिए हैं। आगे की दरें ब्याज दर के अंतर और भविष्य की मुद्रा में उतार-चढ़ाव की अपेक्षाओं से प्रभावित होती हैं।

(बी) विदेशी मुद्रा जोखिमों से निपटने के तरीकों का वर्णन करें। 6+6

उत्तर- _ **हेजिंग**

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources